

## बालीयात्रा

### प्रलम्बिस के लयि:

बालीयात्रा, महानदी, बंगाल की खाड़ी, कालदिस

### मेन्स के लयि:

कलगि साम्राज्य का दक्षणि पूरव एशयिा के साथ संबंघ

## चरचा में क्यौं?

हाल ही में, प्रधानमंत्री ने **G20 शखिर सम्मेलन** के मोके पर बाली में भारतीय प्रवासयिों को अपने संबोधन में प्राचीन कलगि और दक्षणि पूरव एशयिा के बीच सदयिों पुराने संबंघों की स्मृति में कटक में **महानदी** के तट पर आयोजति वार्षकि बालीयात्रा का उल्लेख कयिा ।

- वर्ष 2022 की बालीयात्रा को कागज की सुंदर मूर्तयिों के नरिमाण हेतु ओरगिमी की प्रभावशाली उपलब्धा हासलि करने के लयि गनीज़ वरल्ड रकिॉर्ड्स में शामिल कयिा गया ।

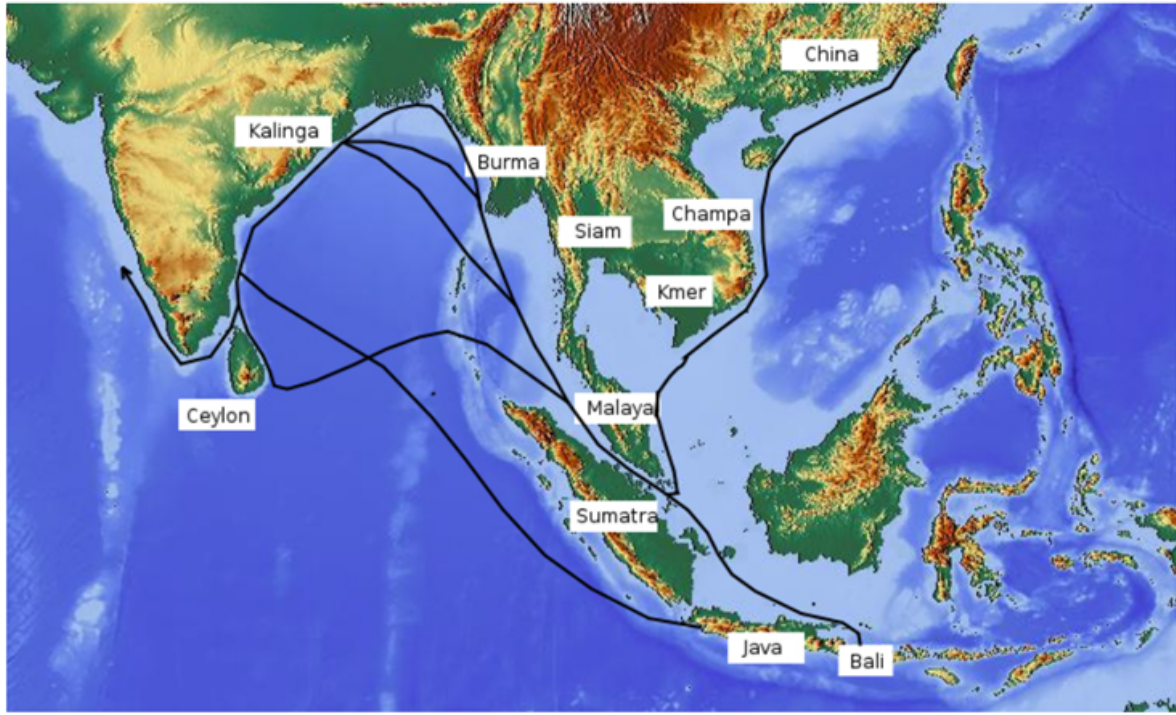
## बालीयात्रा:

- परचिय:**
  - बालीयात्रा, शाब्दकि रूप से 'बाली की यात्रा' देश के सबसे बड़े उत्सवों में से एक है ।
  - बालीयात्रा एक सप्ताह तक चलती है जो कार्तकि पूरणमि (कार्तकि के महीने में पूरणमि की रात) से शुरू होती है ।
- ऐतहासकि/सांस्कृतकि महत्त्व:**
  - यह प्रतविरष प्राचीन कलगि (आज का ओडशिया), बाली तथा अन्य दक्षणि और दक्षणि पूरव एशयिाई कषेत्रों जैसे जावा, सुमात्रा, बोर्नयिो, बर्मा (म्यांमार) और सीलोन (श्रीलंका) के बीच 2,000 साल पुराने समुद्री और सांस्कृतकि संबंघों की स्मृति के उपलक्ष्य में आयोजति कयिा जाता है । .
  - इतहासकारों के अनुसार, कलगि और दक्षणि पूरव एशयिा के बीच व्यापार की लोकप्रयि वस्तुओं में काली मरिच, दालचीनी, इलायची, रेशम, कपूर, सोना और आभूषण शामिल थे ।
  - बालीयात्रा उन वशिषज्ज नावकिों की सरलता और कौशल का जशन मनाती है जनिहोंने कलगि को अपने समय के सबसे समृद्ध साम्राज्यों में से एक बनाया ।
- व्यावसायकि महत्त्व:**
  - बालीयात्रा का अपने सांस्कृतकि और ऐतहासकि तत्त्वों के अलावा एक महत्त्वपूरण व्यावसायकि आयाम है ।
    - यह एक ऐसा समय है जब लोग ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रॉनकि उपकरणों से लेकर स्थानीय कारीगर उत्पादों तक सब कुछ तुलनात्मक रूप से कम कीमतों पर खरीदते हैं ।
    - ज़लिा प्रशासन नीलामी के माध्यम से व्यापारयिों को 1,500 से अधिक स्टालों का आवंटन करता है और मेले में 100 करोड़ रुपए से अधिक का कारोबार होने का अनुमान है ।

## कलगि का दक्षणि-पूरव एशयिा से जुड़ाव:

- उत्पत्त-बंदरगाहों का वकिस:** कलगि साम्राज्य (वर्तमान ओडशिया) अपने गौरवशाली समुद्री इतहास के लयि जाना जाता है । कलगि की भौगोलकि स्थिति के कारण इस कषेत्र में 4वीं और 5वीं शताब्दी ईसा पूरव में बंदरगाहों का वकिस देखा गया था ।
  - कुछ प्रसदिध बंदरगाहों, **तामरलपिती, माणकिपटना, चेलितालो, पालूर और पथुंडा** ने भारत को समुद्र के माध्यम से अन्य देशों के साथ जुड़ने की अनुमति दी । जलद ही **कलगि के श्रीलंका, जावा, बोर्नयिो, सुमात्रा, बाली और बर्मा के साथ व्यापार संबंघ स्थापति हुए ।**
  - बाली ने चार द्वीपों का एक हसिसा बनाया**, जनिहें सामूहकि रूप से सुवरणद्वीप कहा जाता था, इसे आज **इंडोनेशयिा के नाम से जाना जाता है ।**

- **कलिंग के जहाज़:** कलिंग ने 'बोइता' नामक बड़ी नौकाओं का निर्माण किया और इनकी मदद से उसने इंडोनेशियाई द्वीपों के साथ व्यापार किया।
  - **बंगाल की खाड़ी** को कभी कलिंग सागर के रूप में जाना जाता था क्योंकि यह इन जहाज़ों से घरिा हुआ था।
- समुद्री मार्गों पर कलिंग के प्रभुत्व को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि कालदिस ने अपने रघुवंश में कलिंग के राजा को **समुद्र के भगवान' के रूप में संदर्भित किया था।**
- **इंडोनेशिया के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** कलिंग के लोग अक्सर बाली द्वीप के साथ व्यापार करते थे। वस्तुओं के व्यापार ने वचिारों और विश्वासों के आदान-प्रदान को भी जन्म दिया।
- **ओडिया व्यापारियों ने बाली में बस्तियों का गठन किया** और इसकी संस्कृति एवं नैतिकता को प्रभावित किया जिससे इस क्षेत्र में हद्वि धर्म का विकास हुआ।
  - हद्वि धर्म बाली अवधारणाओं के साथ अच्छी तरह से मशिरति है और आज भी, '**बाली हद्वि धर्म'** की अधिकांश आबादी में प्रचलति है।
    - वे शवि, वशिणु, गणेश और ब्रह्मा जैसे वभिनिन हद्वि देवताओं की पूजा करते हैं।
    - शवि को पीठासीन देवता माना जाता था और बुद्ध के बड़े भाई माने जाते थे।
  - बाली के लोग शविरात्र, दुर्गा पूजा और सरस्वती पूजा जैसे हद्वि त्योहार भी मनाते हैं।
    - बाली में मनाया जाने वाला '**मसकापन के तुकड'** उत्सव ओडशा में बालीयात्रा उत्सव के समान है। दोनों को उनके पूर्वजों की याद में मनाया जाता है।



Map of the sea routes of the Kalinga Empire.

//

**स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस**